13-8-66 (10 वर्षों) मे स्थापना | [illegible]

प्रातः क्लास [illegible] (13-8-66)

[illegible] बच्चों को [illegible] है [illegible] यह तो [illegible] है कि 10 वर्ष अन्दर ड्रामा प्लेनुसार सारा कार्य होना है। बाकी 10 वर्ष रहे है। इस रावण पुरी को [illegible] विष्णु पुरी बनाने। अब बाप गुप्त भी है, पढ़ाई भी गुप्त [illegible] है। सेन्टर्स तो बहुत है। छोटे बड़े गांवों मे छोटे बड़े सेन्टर्स है। और बच्चे भी बहुत है। सब बच्चों ने चैलेंज दी है। और लिखना भी है जब कोई लिटरेचर बनाना है तो उसमें तारीख लिखनी है। आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारतभूमि को स्वर्ग बना कर छोड़ेंगे। तुमको यह भारतभूमि बहुत प्रिय है। क्योंकि तुम जानते हो यह भारत ही स्वर्ग था। उनको 5000 वर्ष हुए। भारत बहुत [illegible] था। [illegible] स्वर्ग कहा जाता था। तुम [illegible] सब को भी यह नालेज है। इस भारत को श्री मत पर स्वर्ग [illegible] बनाना है। सब को रास्ता बताना है। और कोई खिट पिट की बात नहीं। आपस मे बैठ सब कमी [illegible] प्रदर्शनी के चित्रों [illegible] हम ऐसे क्या ऐडवरटाईजमेन्ट करे जो अखबार मे भी चित्र देवे। [illegible] पर विचार करना चाहिए। जैसे कांग्रेसलोग आपस मे मिलते है राय करते है कि भारत को हम कैसे सुधारे। यह जो इतने [illegible] हो गए है उनको आपस मे मिल कर ठीक करे और भारत मे सुख शान्ति की स्थापन [illegible] गवर्मेन्ट का भी यह पुरुषार्थ चलता है। तुम भी पाण्डव गवर्मेन्ट गाई हुई हो। यह बड़ी ईश्वरी गवर्मेन्ट है। पतित पावन बाप ही पतित बच्चों को बैठ पावन दुनियां का मालिक बनाते है। यह बच्चे ही जानते है। [illegible] ही भारत का आदी सनातन देवी देवता धर्म। यह भी बच्चे जानते है यह है [illegible] कहा जाता ईश्वर बाबा की। गाया हुआ है ईश्वर ज्ञान यज्ञ रचा था। वो लोग नहीं जानते कि [illegible] ज्ञान यज्ञ रचा था। उन्हों ने तो टाईम लम्बा चौड़ा लगा दिया है। अज्ञान नींद घोर अन्धयारे मे सब है। अब तुमको बाप ने जगाया है। तुम को औरो को जगाना है। ड्रामा प्लेनुसार तुम जगाते रहते हो। इस समय तक [illegible] ने [illegible] पुरुषार्थ किया है उतना ही कल्प पहले किया था। हाँ युद्ध के मैदान मे [illegible] तो [illegible] को पवित्र नहीं [illegible] तेजी से चलती है [illegible] बच्चों मे माया के विघ्न पड़ जाते है। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। लक्ष्मण माया राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लव कुश के लिए भी कहानी है ना। लड़ाई के मैदान मे राम के बच्चे बेहोश हो गए। राम के बच्चे कोई दो नहीं है। [illegible] तो ढेर बच्चे है। [illegible] सब मनुष्य कुम्भकरण की नींद मे सोए हुए है। तुम ईश्वरी सम्प्रदाय ही [illegible] जिनको ज्ञान [illegible] मिला है और [illegible] है थोड़ी [illegible] इसमे एक दो को कहने की भी कोई बात नहीं है। तुम जानते हो हम [illegible] सोए हुए है। वो [illegible] नहीं जानते कि परम पिता परमात्मा [illegible] को वर्सा देने। यह बिलकुल भूल गए है। बाप भारत मे ही [illegible] है। [illegible] भारत को स्वर्ग का मालिक बनाते है। भारत स्वर्ग का मालिक था अब इसमे कोई शक नहीं है। परम पिता परमात्मा का [illegible] होता है। शिव जयन्ती भी मनाते है। जरूर उसने आकर कुछ तो किया होगा ना। बुधि कहती है जरूर आकर [illegible] की स्थापना की होगी। प्रेरणा से थोड़ेई स्थापना करेंगे। यहाँ तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है [illegible] बाप [illegible] पढ़ाई जाती है। प्रेरणा से कोई [illegible] नहीं होता। समझते है शंकर की भी प्रेरणा होती है तो वो [illegible] मूसल [illegible] है। परन्तु इसमे प्रेरणा की बात ही नहीं। तुम [illegible] हो [illegible] है ड्रामा [illegible] यह मूसल बनाना। प्रेरणा की कोई बात नहीं। यह शास्त्रों के अक्षर है। शंकर द्वारा विनाश। शंकर को [illegible] है जैसे रावण को [illegible] है। [illegible] कहा जाता है। उनको कोई [illegible] नहीं। [illegible] प्रेरणा की बात है। जो शंकर द्वारा विनाश [illegible] किया है। अब शंकर तो सूक्ष्म वतन मे है। वहाँ से प्रेरणा तो [illegible] नहीं। ड्रामानुसार विनाश तो [illegible] होना ही है। गाया हुआ है महाभारत लड़ाई [illegible]

*-1 [illegible] जो [illegible] है [illegible] होगा। तुम [illegible] करते हो [illegible] 10 वर्ष के अन्दर [illegible]

13-९८६

स्थापना करेंगे जहां एक धर्म होगा। तुम ऐसे नही लिखते हो कि अनेक धर्म विनाश होंगे वो तो फिर भी लि
हुआ है। स्वर्ग की स्थापना होती है तो दूसरा धर्म होता ही नही। तो जरूर वो सब विनाश हो जावेंगे। शंकर आद
की कोई बड़ी बात नही है। परन्तु चित्र है गाया हुआ है तो समझाया जाता है। ब्रह्मा कुमार दवारा स्थापना
विष्णु दवारा पालना तो ठीक है। शंकर को फिर शिव साथ मिला दिया है। शिव शंकर कह देते है। क्योंकि शंकर
तो कोई काम नही करते है नां। तो शिव से मिला दिया है। परन्तु शिव बाबा कहते है मुझे तो बहुत काम
करना पड़ता है। शंकर की तो मेरे साथ कोई बात ही नही। वो तो सूक्ष्म वतन वासी आकारी है। मै तो इस
साकार में आकर इन दवारा स्थापना का कार्य करता हूं। शंकर का तो इतना पार्ट है नही। शंकर की पूजा कर मनुष्य
क्या करेंगे। शिव की पूजा होती है। शिव परमात्मा नमः कहते है। ब्रह्मा भी तो प्रजा पिता ठहरा नां। बाकी
शंकर लिए कहते यह धतूरा खाते थे जैसेकि उनका पार्ट कोई अच्छा पार्ट नही है। धतूरा खाया भंग पीते थे।
यह सब शास्त्रों की कथाएं बनाई है। अब तुमको समझ मे आता है। शंकर का इतना पार्ट नही है। सब से बड़ा
पार्ट है शिव का। ब्रह्मा का और विष्णु का। ब्रह्मा सो विष्णु विष्णु सो ब्रह्मा। यह तो बड़ी गुह्य बाते है।
विष्णु से ब्रह्मा कैसे बनते है, ब्रह्मा से फिर विष्णु कैसे बनते है यह बड़ी गुह्य बाते है। सेन्सीबुल बच्चो की
बुध मे झट आ जाता है। देवी समाचार तो बननी ही है। शंकर की बात नही है। इन बातो को तुम बच्चे
समझते हो। दुनिया मे एक भी मनुष्य नही समझते। भल लक्ष्मी नारायण वा विष्णु की पूजा भी करते है परन्तु
उनको यह पता नही है कि विष्णु ही फिर लक्ष्मी नारायण बनते है। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी नारायण है। जो नई
दुनिया मे राज्य करते थे। बाकी 4 भुजा वाला कोई मनुष्य नही होता। यह सूक्ष्म वतन मे एम आबजेक्ट दिखाते
है प्रवृत्ति मार्ग का। यह सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे चक्कर लगाती है यह कोई नही जानते। बाप को ही
नही जानते तो बाप की रचना को कैसे जान सकते। बाप ही रचना की आद मध्य अन्त का नालेज बताते है
ऋषी मुनी भी कहते थे हम नही जानते। बाप को जान जाए तो रचना के आद मध्य अन्त को भी जान जाए
बाप कहते है मै एकही बार आकर तुम बच्चो को यह सारा नालेज समझाता हूं। फिर आता ही नही हूं तो
रचना के आद मध्य अन्त को जाने कैसे। बाप स्वयं कहते है मै सिवाए संगमयुग के कब आता नही हूं। मुझे
बुलाते भी संगम पर है। पावन सतयुग को पतित कलयुग को कहा जाता है। जब तो मै जरूर आऊंगा। पतित दुनियां
के अन्त मे नां। बुलाते भी है आकर हमको पावन बनाओ। तो अन्त मे ही आए पावन बनाऊंगा। कलयुग अन्त
मे आए पतित से पावन बनाते है। सतयुग आद मे पावन है। यह तो सहज बात है। मनुष्य कुछ भी समझ
नही सकते। कि पतित पावन बाप कब आवेंगे। अब तो कलयुग का अन्त कहेंगे। अगर कहे कलयुग की अन्त मे
40 हजार वर्ष है तो अजुन कितना पतित बनेंगे कितना दुख होगा। सुख तो होगा ही नही। कुछ भी
मालूम ना होने कारण बिलकुल ही घोर अन्धयारे मे है। तुम बच्चे समझ सकते हो। तो बच्चो को आपस मे
मिल कर राय करनी चाहिए कैसे सर्विस को बढ़ावे। बाप प्रयत्न तो बताते रहते है। फिर बच्चो को आपस मे
मिलना है। चित्रो पर अच्छी रीत समझाना होता है। यह भी ड्रामानुसार चित्र निकले है। बच्चे समझते है जो2
समय पास होता है हूं बहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चो की अवस्थाएं कब ऊपर कब नीचे होती रहेगी। यह
बड़ी समझने की बाते है। कब2 माया वारी आ बैठती है तो उनको मिटाने लिए कितने प्रयत्न करते है। बाबा
घड़ी2 कहते है बच्चे तुम देह अभिमान मे आ जाते हो इसलिए टकराते हो। इसमें देही अभिमानी बनना
पड़े। बच्चो मे देह अभिमान बहुत है। तुम देही अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे। और सर्विस मे उन्नती
करते रहेंगे। ऊंच पद जिनको पाना है वो सदैव सर्विस मे लगे रहेंगे। तकदीर मे नही है तो तदबीर भी नही होगी
खुद कहते है बाबा हमको धारणा नही होती। बुधि मे नही बैठता। जिनको धारणा होती है तो खुशी बहुत
होती है। समझते है विश्व का मालिक बनना है... बाप कहते है बच्चे तुम अच्छी रीत समझ कर फिर औरो
को समझाओ। कोई तो सर्विस मे लगे रहते है। पुरुषार्थ करते रहते है। यह भी बच्चे समझते है जो2 सेकेन्ड

कोई नां। यह मधुबन तो मधुबन है। यहां पढ़ाई भी होती है। सचमुच हास्टल भी है। हास्टल में रहते है तो हास्टल में रहने से पढ़ते अच्छा है। बाहर जाने से फिर संग दोष से खराब हो जाते है। यहां से भी बाहर जाते तो फिर स्टुडन्ट लाईफ कानशस गुम हो जाता है। पढ़ाने वाली महमणी का भी वहां इतना नशा नहीं रहेगा। यह हेड आफिस तो मधुबन है। स्टुडन्ट टीचर के सामने रहते है। गोरख धन्धा कोई नहीं है। रात दिन का फर्क है। कोई तो शिव बाबा को और दिन में याद ही नहीं करते। शिव बाबा के मददगार नहीं बनते। बच्चे बन कर फिर जैसे दुशमन बन जाते है। शिव बाबा के बच्चे बने तो सर्विस करो। अगर सर्विस नहीं करते तो जो कपूत बच्चे हो। पूत वाले बच्चे हो। बाबा तो समझते है नां। इनका फर्ज है कहना। सुरेस्पद को फलो करे तो बहुत2 कल्याण है। पूत की पैदाश भ्रष्टाचारी है। उनको छसे छोड़ते जाओ। इनसे संग नां रखो। बाप समझाते तो है परन्तु किस की तकदीर में भी हो नां। बाबा के पास बाम्बे घाटकूपर से एक बच्चे का चार्ट आया। उनसे भी बहुत कल्याण होगा। धन्धा तो भी कोई मुशकल याद में रहता होगा। 8 घन्टे तक अन्त में पहुंचना है। कर्मयोगी तो हो नां। कोई2 को कब रीचक आता है तो चार्ट रखते है। यह अच्छा है। जितना बाबा को याद करेंगे फायदा है। गाया भी हुआ है अन्त काल जो ·· बल, बल का अर्थ क्या है? जो अच्छी रीत याद नहीं करे तुम जन्म जन्मान्तर का जो बोझा है बल2 को जन्म देकर सा० क्वारन्टेन सज़ा देंगे। जैसे काशी कलवट खाते है तो झट पापो का सा० होता है। मारसुरा करते है इन पापो की सज़ा खाते रहते है। यह भी ऐसे होता है बहुत मोचरा खाने वाले है। बाप की सर्विस में जो विघ्न डालते है वो मोचरे के लायक है। बाप की सर्विस में बाधा डालते है। जिनका राईट हैन्ड धर्मराज है। यहां तो कसम उठाने की बात नहीं। बाप कहते है मेरे बाप प्रतिज्ञा कर कसम उठाओ। बाप की याद से ही तुम पावन बनेंगे। नहीं तो नहीं। बाप प्रतिज्ञा कराते है कि फौं मां करो। नां करेंगे तो नां पायेंगे। कहते है जो दूर वास करते रहते है। भक्ति मार्ग में गाते तो है तो एक आप दूसरा नां कोई। परन्तु वो बात अब बुद्धि में आई है कि आत्मा क्यों ऐसा गाती है। रात दिन गाते रहते है। मेरा तो गिरधर गोपाल दूसरा नां कोई। यह तो जब संगम पर बाप आए तब अपने घर ले जाए। कृष्ण पुरी में जाने लिए तुम पढ़ते हो नां। प्रिन्सेज के कालेज होते है जहां प्रिन्स प्रिन्सेज पढ़ने जाते है। वो तो है हद की बात। कष्ट विचार पढ़ते कब मर जाते। यह है प्रिन्स प्रिन्सेज बनने की गाड फादरली युनीवर्सटी। राजयोग है नां। नर से नारायण बनते हो। तुम पढ़ते हो प्रिन्स प्रिन्सेज बनने लिए। वो प्रिन्स प्रिन्सेज जाते है पढ़ने लिए। तो बाप से वर्सा ले सतयुग में प्रिन्स प्रिन्सेज बनते हो। बाप कितनी मीठी बाते सुनाते है। याद रखना चाहिए नां। कोई तो यहां से बाहर निकले और फूल हो जाते। बाबा को याद भी नहीं करते। जो जास्ती याद करेंगे वो औरो को भी कराते रहेंगे। युक्ति रचनी चाहिए। हम कैसे बहुतो का कल्याण करे। बाहर वाले प्रजा में दास दासी, यहां वाले फिर रजाईयो में दास दासी बनेंगे। आगे चल सब सा० होगा। तुम भी फील करेंगे। बरोबर हम ने पूरा पुरुषार्थ नहीं किया है। बहुत चमत्कार देखेंगे। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे लिखेंगे वोही नवाब बनेंगे। बाबा कितना कहते रहते है सेन्टर को प्रदर्शनी देता हूं तो बच्चो को सिखाए होशियार बनाओ। तब बाबा कहेंगे महम्मा। कुमारियां सर्विस जानती है। आपसमान नां बनाये तो झट फंसेंगे। सर्विस करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। इसलिए बाबा प्रदर्शनी बनाने और दे रहे है। अब बाम्बे देहली और आगरा वाले बनाते है। और कोई सेन्टर वाले में दम नहीं है। जो प्रदर्शनी के चित्र बना सकें। यह चित्र बनाना तो बहुत सहज चीज़ है। जो बाबा समझते है एक भी बच्चा समझदार नहीं। बुद्धु बुध है। नहीं तो चित्र कर प्रदर्शनी बनाने में मदद करनी चाहिए। इतो समझाने से बच्चो को सहज होगा। ऐसे थोड़ेई कि कानपुर बैंगलोर में आर्टिस्ट नहीं है। बच्चो में कोताही है जो बना नहीं सकते। कानपुर आदि वाले क्यों नहीं अपना सेट बनाते है। बाबा समझते है रिगार्ड नहीं। टीचर मैनेजर ठन्डे है। कोई2 महमणीयां मैनेजर बनती है तो माया भी फिर जाता है। नुकसान [illegible] अभिमान आ जाता है। कभी [illegible] सर्विस भी [illegible] बाबा कोई [illegible]

19-8-66

[illegible] है हम बहुत अच्छे चलते है। दूसरे से पूछो तो 10 बाते सुनावेंगे। बाबा बड़ा चक्की में डालते [illegible] किसी को ऐसे मारते होते है तो पत्थर हो जाते है। यहां भी सर्विस करते है तो माथा ही फिर [illegible] बच्चों को सर्विस2 और सर्विस में रहना है। बाप [illegible] दिल दुख हर्ता सुख कर्ता है बच्चो को भी बनना है। [illegible] बाप का परिचय देना है। बाप कहते है [illegible] याद करो तो तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन जावेंगे। कितना सहज है। बाप कहते है मुझे याद करो तो पतित से पावन बन तुम शान्तिधाम सुखधाम मे चले जावेंगे। निश्चय हो तो फिर एकदम लिख्या लेना चाहिए। लिखते है [illegible] ब्रह्मा कुमारियां शिव बाबा से वर्सा लेते है। तो समझेंगे ऐसे बाप का बच्चा बनना चाहिए। शरण पड़ना चाहिए। तुम बाप की शरण [illegible] हो ना। अर्थात गोद में आए हो। अच्छा। मात पिता बाप दादा का याद प्यार गुड नाईट। ओम।

रात्री क्लास (12-8-66) बाबा प्रदर्शनी देते ही इसलिए है कि बच्चों को, [illegible] सीख जावें। [illegible] 15 [illegible] दो को तैयार करना है। आगे वाले तो है नए2 को तैयार करना चाहिए। सिखाने वाला होशियार हो तो 5-10 भी तैयार कर सकते है। अगर तैयार ना किया तो प्रदर्शनी उनसे लेकर और को दे देंगे। प्रदर्शनी पर बच्चियां सर्विस कर सकती है। प्रदर्शनी बाबा ऐसी युक्ति से बनावेंगे जो झट पैक कर कहां भी ले जाए [illegible] बहुत ही चीजें होती है। प्रदर्शनी बनाने वालों को यह ख्याल में आना चाहिए। समझ चलना चाहिए। पैक करने लिए ऐसी चीज बनावें। [illegible] एक ही [illegible]

यहां के बच्चे ऐसे होने चाहिए जो प्रदर्शनी पर अच्छी रीत समझा सके। महाभारत लड़ाई भी गीता में प्रसिद्ध है। गीता है आदी सनातन देवी धर्म का शास्त्र। भगवान तो एक ही होता है जो पुर्नजन्म रहित है। [illegible] कृष्ण अथवा ब्रह्मा विष्णु तो पुर्नजन्म में आते है। बाकी शंकर नहीं आते। शिव भी आते है। ब्रह्मा [illegible] विष्णु भी भारत मे आते है। शिव पतित पावन को तो जरूर आना है। शंकर को सूक्ष्म वतन में दिखाते है। [illegible] ब्रह्मा विष्णु शंकर तीन की बात है। ब्रह्मा में आते ही संगम में है। ब्रह्मा सतयुग में तो होता नहीं। ब्रह्मा में आकर आए पतित को पावन बनाते है। तो ब्रह्मा भी पतित होगा। समझाने का ढंग बड़ा अच्छा होना चाहिए। बाहर से आते है उदेश पूछते है। बोलो तुम आए ही [illegible] हो। ब्रह्मा कुमार कुमारीयां है ना। प्रजा पिता ब्रह्मा भी नामी ग्रामी है। तुम आए ही हो घर से। साधु [illegible] है नहीं। मां बाप दादा। साधु सन्त आद यहां है नहीं। प्रजा पिता ब्रह्मा है तो तुम भी सन्तान हो। [illegible] पिता कहते है तो जरूर उनको वर्सा देंगे ना। बाप ब्रह्मा को कहते है तो ब्रह्मा कुमार कुमारीयों को वर्सा देते है। वर्सा मिलता है शिव बाबा से। बेहद का बाप वो है। है दोनों बाप। दोनो में से वर्सा किस से मिलता है [illegible] से पवित्र हो हम बाप उनको कहते है। देने वाला वो है। वर्सा गाड फादर से मिलता है। [illegible] आत्मा निराकार बाप को याद करती है। वर्सा भी निराकार से मिलना है [illegible] से। वो पहले पूछना चाहिए आए कहां होश्नाम तो दस्यो। तुम भी प्रजा पिता ब्रह्मा के बच्चे हो। ब्रह्मा कुमार कुमारियां शिव से वर्सा लेते है। तुमको भी वर्सा लेना है तो आकर [illegible] हो। अल्लाह को याद करो। यहां का उदेश ही यह है। [illegible] भारतवासी ही 84 जन्म लेते है। अब भारत को पहले नम्बर में जाना है। हम भारत को ऐसा स्वर्ग बनाते है। फिर यहां और कोई होता नहीं। [illegible] का फैसला चाहिए। अच्छी रीत समझाओ तो फिर खुशी में रहेंगे। प्रदर्शनी होशियार बहुत हो सकते है। (रिकार्ड) इस समय तुम बच्चों [illegible] सब से अच्छा है। सतयुग में फिर भी दैवी [illegible] स्थापना हो रही है। यह है ईश्वरीय [illegible] दैवी [illegible]। तुम सर्विस करते हो। रूहानी सोशल वर्कर तुम हो। तुम्हारे सिवाए और कोई यहां होते। [illegible] [illegible] अच्छा [illegible] यह। सर्वोत्तम है यह ब्रह्मण कुल भूषण। [illegible] करते है। [illegible] फूलों का [illegible] बनाते है। बहुत है जो [illegible] सर्विस के लिए तड़फती बहुत है। [illegible]

[illegible]